

# विद्यालय के पाठ्यक्रम में लोक संगीत और भक्ति संगीत का समावेश: शैक्षिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण

RENU GUPTA

RESEARCH SCHOLAR, LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY PHAGWARA, PUNJAB

DR. RAVJOT KAUR

ASSOCIATE PROFESSOR, DEPT. OF PERFORMING ARTS, MUSIC, LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY, PHAGWARA, PUNJAB

## ABSTRACT

*There is much promise in enriching students' cultural and academic experiences via the inclusion of folk and devotional music in the school curriculum. Devotional music helps people find emotional stability, moral principles, and a spiritual connection, while folk music is a reflection of a community's history, social stories, and cultural identity. Traditional musical practices have not been adequately taught in mainstream schools, despite the cultural significance of these practices. Focusing on the ways in which it promotes holistic development and cultural continuity, this research analyses the pedagogical and cultural viewpoints linked to incorporating folk and devotional music into school curriculum. The research showcases the beneficial effects of traditional music on students' creativity, memory, empathy, and value development using a mixed-methods approach that includes literature review, interviews with teachers, and curriculum analysis. A number of obstacles are also highlighted by the results, including a lack of organized curriculum standards, insufficient institutional support, and poor teacher preparation. The report suggests ways to integrate effectively, such as using activity-based learning, involving the community, and aligning with National Education Policy 2020, which prioritizes cultural and artistic education. In order to create culturally grounded, emotionally stable, and socially responsible persons, the paper contends that traditional music education must be strengthened in schools via the integration of folk and devotional music. It advocates for actions at the policy level to accomplish this.*

**Keywords:** Folk music; devotional music; school curriculum; cultural education; holistic development; music education; creativity; empathy; value education; National Education Policy 2020

## परिचय

संगीत हमेशा से इंसानी सोच का एक जरूरी हिस्सा रहा है, जो मूल्यों, भावनाओं और सामूहिक पहचान को बताने का एक जरिया है। भारत के संदर्भ में, लोक और भक्ति संगीत की एक खास जगह है क्योंकि वे अलग-अलग इलाकों के समुदायों की सांस्कृतिक विविधता, आध्यात्मिक विरासत और पारंपरिक ज्ञान को दिखाते हैं। जैसे-जैसे शिक्षा तेजी से मॉडर्न, स्किल-बेस्ड लर्निंग की ओर बढ़ रही है, पारंपरिक संगीत जैसे सांस्कृतिक तत्वों को शामिल करना पूरे विकास के लिए जरूरी हो गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (छम्च) 2020 भी सांस्कृतिक रूप से जुड़ी होने, बहुविषयक शिक्षा और संतुलित संज्ञानात्मक और भावनात्मक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए कला को शामिल करने पर जोर देती है। इस संदर्भ में, स्कूल के पाठ्यक्रम में लोक और भक्ति संगीत को शामिल करना सांस्कृतिक रूप से जागरूक, नैतिक रूप से सक्षम और भावनात्मक रूप से अभिव्यक्तिशील विद्यार्थियों के निर्माण की दिशा में एक सार्थक कदम बन जाता है। लोक संगीत स्थानीय समुदायों की कहानियों, रीति-रिवाजों और रोजमर्रा की जिंदगी को दिखाता है। लोक संगीत पीढ़ियों से मौखिक परंपरा के रूप में आगे बढ़ाया जाता है, जो विभिन्न पीढ़ियों के बीच एक सांस्कृतिक पुल बनाता है और अमूर्त विरासत को संरक्षित करता है। दूसरी ओर भक्ति संगीतकृजैसे भजन, कीर्तन, सूफी गीत और क्षेत्रीय प्रार्थना परंपराएँ आध्यात्मिक संवेदना, श्रद्धा और नैतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करता है। ये दोनों संगीत रूप मिलकर युवा विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सहानुभूति, सांस्कृतिक गर्व और सामाजिक सद्भाव को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

अपनी स्पष्ट शैक्षणिक और सांस्कृतिक उपयोगिता के बावजूद, पारंपरिक संगीत प्रथा को अक्सर मुख्यधारा की शिक्षा में पर्याप्त स्थान नहीं मिलता। कई स्कूल पश्चिमी संगीत, इंस्ट्रूमेंटल ट्रेनिंग या समकालीन शैलियों को प्राथमिकता देते हैं, जिसके कारण छात्रों का स्थानीय कला परंपराओं से परिचय सीमित रह जाता है। कक्षा में लोक और भक्ति संगीत को शामिल करने से विद्यार्थियों का अपनी सांस्कृतिक जड़ों से संबंध मजबूत हो सकता है, साथ ही रचनात्मकता, स्मरण शक्ति और रिदम-आधारित सीखने की क्षमता भी बढ़ सकती है। यह संगीत मूल्य-आधारित शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण साधन साबित हो सकता है, क्योंकि यह तालमेल, श्रद्धा, सम्मान और समुदाय की भागीदारी जैसे मूल्यों को स्वाभाविक रूप से सिखाता है। इसके अतिरिक्त, छात्रों को पारंपरिक संगीत गतिविधियों में शामिल करने से उन्हें प्रदर्शन, उत्सवों, स्थानीय कलाकारों के साथ कार्यशालाओं और सामुदायिक सहयोग जैसे अनुभवात्मक सीखने के अवसर मिलते हैं। ऐसी गतिविधियाँ न केवल संगीतमय कौशल को विकसित करती हैं बल्कि आत्मविश्वास, टीमवर्क और सौंदर्यबोध भी प्रोत्साहित करती हैं। हालाँकि, संरचित पाठ्यक्रम की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव और सीमित संस्थागत प्राथमिकता पारंपरिक संगीत के व्यवस्थित एकीकरण में महत्वपूर्ण बाधाएँ पैदा करती हैं। कई शिक्षक पारंपरिक संगीत के शैक्षणिक लाभों से अनजान रहते हैं, और स्कूलों में अक्सर संस्कृति-आधारित संगीत शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधन और

स्पष्ट दिशानिर्देश उपलब्ध नहीं होते। इससे भारत की समृद्ध संगीत विरासत और कक्षा में मिलने वाले वास्तविक सीखने के अनुभवों के बीच एक स्पष्ट अंतर उभरता है। इसी पृष्ठभूमि में, यह शोध विद्यालयी पाठ्यक्रम में लोक और भक्ति संगीत को शामिल करने के शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक महत्व को समझने, मौजूदा चुनौतियों की पहचान करने तथा पारंपरिक संगीत को स्कूली शिक्षा का एक नियमित और सार्थक हिस्सा बनाने के उपाय सुझाने का प्रयास करता है।

### लोक और भक्ति संगीत का मतलब और महत्व

लोक और भक्ति संगीत भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान के मूल स्वरूपों में से हैं। लोक संगीत गाँवों और आदिवासी समुदायों की रोजमर्रा की जिंदगी से उपजता है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा के रूप में आगे बढ़कर भाषाओं, रीति-रिवाजों और क्षेत्रीय इतिहास को संजोए रखता है। राजस्थान, बंगाल, ओडिशा, पंजाब और नॉर्थईस्ट जैसे विभिन्न क्षेत्रों के लोक गीत स्थानीय जीवन, त्योहारों, वातावरण और सामूहिक अनुभवों को दर्शाते हैं। यह केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समुदाय की कहानियों, भावनाओं और मूल्यों को व्यक्त करने का माध्यम है।

इसके विपरीत, भक्ति संगीतकृजैसे भजन, कीर्तन, कव्वाली, अभंग और शबदकृआध्यात्मिक भावनाओं और नैतिक मूल्यों को गहराई से छूता है। मीराबाई, कबीर, तुलसीदास, नानक और तुकाराम जैसे संतों ने भक्ति संगीत के माध्यम से समानता, दया और नैतिक अनुशासन का संदेश दिया। इसलिए भक्ति संगीत मन की शांति, भावनात्मक संतुलन और आध्यात्मिक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक है। स्कूलों के पाठ्यक्रम में लोक और भक्ति संगीत को शामिल करना छात्रों के सांस्कृतिक जुड़ाव, पहचान और गर्व को मजबूत करता है। स्थानीय भाषा के गीत, त्योहारों से जुड़ी धुनें और कथात्मक तत्व रचनात्मकता, स्मरण शक्ति, श्रवण कौशल और भावनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाते हैं। इन संगीत रूपों की सादगी उन्हें सभी छात्रों के लिए सुलभ बनाती है, जिससे सहभागिता, सहयोग और साझा सांस्कृतिक अनुभव को बढ़ावा मिलता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में ये पारंपरिक संगीत रूप एकता, सम्मान और सामुदायिक जुड़ाव को विकसित करते हैं। आधुनिक शिक्षा के तनावपूर्ण माहौल में भक्ति संगीत मानसिक शांति, माइंडफुलनेस और भावनात्मक स्थिरता प्रदान करता है। इस तरह, लोक और भक्ति संगीत केवल कलात्मक माध्यम नहीं, बल्कि प्रभावी शिक्षण उपकरण हैं, जो सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील, आत्मविश्वासी और भावनात्मक रूप से स्वस्थ शिक्षार्थियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

### शिक्षा में सांस्कृतिक संरक्षण का महत्व

शिक्षा में सांस्कृतिक संरक्षण समाज की पहचान, इतिहास और मूल्यों को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण साधन है। स्कूल वह जगह हैं जहाँ बच्चे न केवल अकादमिक कौशल सीखते हैं, बल्कि अपनी जड़ों, परंपराओं और सांस्कृतिक पहचान को भी समझते हैं। पारंपरिक कला, संगीत, भाषा और रीति-रिवाजों को पाठ्यक्रम से जोड़ने से बच्चे तेजी से बदलती दुनिया में भी अपनी विरासत से जुड़े रहते हैं। यह राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ाता है। लोक और भक्ति संगीत इस प्रक्रिया में विशेष भूमिका निभाते हैं। लोक संगीत क्षेत्रीय भाषाओं, परंपराओं और सामाजिक अनुभवों को संरक्षित करता है, जबकि भक्ति संगीत विनम्रता, कृतज्ञता, करुणा और शांति जैसे मूल्यों को विकसित करता है। आधुनिक मनोरंजन और वैश्विक संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण बच्चे अपनी परंपराओं से दूर होते जा रहे हैं इसलिए शिक्षा को इस अंतर को भरने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। सांस्कृतिक शिक्षा भावनात्मक और नैतिक विकास को मजबूत बनाती है। लोक गीत समुदाय-भाव, सहयोग और मिलजुलकर सीखने को बढ़ाते हैं, वहीं भक्ति संगीत मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और नैतिक समझ विकसित करता है। पारंपरिक कला कल्पनाशीलता, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को भी बढ़ावा देती है। परिवार और समुदाय की भागीदारी बढ़ने से सीखने की प्रक्रिया और अर्थपूर्ण बनती है।

यह दृष्टिकोण (NEP 2020) की उस भावना से मेल खाता है जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, क्षेत्रीय विविधता, कला-आधारित सीखने और अनुभवजन्य शिक्षा पर बल दिया गया है। लोक कलाकारों की सहभागिता, सांस्कृतिक कार्यशालाएँ और सामुदायिक कार्यक्रम छात्रों को वास्तविक सीखने के अवसर प्रदान करते हैं। इसके बावजूद, भारतीय स्कूलों में लोक और भक्ति संगीत को पर्याप्त स्थान नहीं मिलता। पाठ्यक्रम दिशानिर्देशों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव और सीमित संसाधन इसके समुचित उपयोग में बाधाएँ पैदा करते हैं। इससे पारंपरिक विरासत और आधुनिक शिक्षा के बीच दूरी बढ़ती है और छात्र अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कम परिचित रह जाते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि लोक और भक्ति संगीत को स्कूल पाठ्यक्रम में सार्थक रूप से शामिल कर छात्रों के संपूर्ण विकास, मूल्य-शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण

को कैसे मजबूत किया जा सकता है। हालांकि अध्ययन क्षेत्रीय विविधताओं और गहन संगीत प्रशिक्षण जैसे पहलुओं को शामिल न कर पाने के कारण सीमित भी है।

### उद्देश्य

- पूरी शिक्षा में लोक और भक्ति संगीत के महत्व का विश्लेषण करना।
- पारंपरिक संगीत के जरिए बढ़ावा दिए जाने वाले सांस्कृतिक, नैतिक और भावनात्मक मूल्यों की जांच करना।
- स्कूल के पाठ्यक्रम में एकीकरण के मौजूदा स्तर का मूल्यांकन करना।
- लोक और भक्ति संगीत को असरदार तरीके से शामिल करने के लिए रणनीति सुझाना।

### अनुसंधान प्रश्न

- लोक और भक्ति संगीत छात्रों में सांस्कृतिक जागरूकता को कैसे विकसित करते हैं?
- पारंपरिक संगीत को एकीकृत करने के शैक्षणिक लाभ क्या हैं?
- ऐसे कार्यक्रमों को लागू करने में स्कूलों को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?
- कौन-सी रणनीतियाँ पाठ्यक्रम को अधिक प्रभावी बना सकती हैं

### साहित्य की समीक्षा

ए. के. सिंह (2015) जैसे शोधकर्ताओं ने बताया है कि लोक संगीत क्षेत्रीय भाषाओं, रीति-रिवाजों और मौखिक इतिहास को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन में कहा गया है कि लोक गीत सांस्कृतिक अभिलेख (सांस्कृतिक अभिलेखागार) का कार्य करते हैं, जो समुदाय के मूल्य, परंपराएँ, त्योहार और सामूहिक स्मृतियों को प्रतिबिंबित करते हैं। इन परंपराओं को स्कूल की गतिविधियों में शामिल करने से सांस्कृतिक साक्षरता मजबूत होती है, सामाजिक जुड़ाव बढ़ता है और विविधता के प्रति सम्मान विकसित होता है। सिंह का मानना है कि बच्चे तब बेहतर सीखते हैं जब पाठ्य-वस्तु उनके वातावरण से जुड़ी होती है, इसलिए लोक संगीत संदर्भ-आधारित शिक्षण का एक प्रभावी उपकरण बन जाता है (सिंह, 2015)।

शर्मा और मेहता (2017) ने यह समझने का प्रयास किया कि भक्ति संगीत बच्चों के नैतिक और भावनात्मक विकास में कैसे योगदान देता है। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि भजन, कीर्तन और सूफी संगीत जैसे रूप सहानुभूति, शांति, विनम्रता और आभार जैसी मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। भक्ति गायन भावनात्मक संतुलन को बेहतर बनाता है, तनाव कम करता है और चिंतनशील क्षमता को विकसित करता है। अध्ययन में सुझाव दिया गया है कि स्कूल असेंबली, मूल्य-आधारित शिक्षा कक्षाओं और मेडिटेशन पीरियड में भक्ति संगीत को शामिल किया जाए ताकि विद्यार्थियों में संतुलित मनोवैज्ञानिक और नैतिक विकास संभव हो सके (शर्मा और मेहता, 2017)।

रॉबर्ट और हॉलम (2018) के अनुसार, संगीत शिक्षा विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक क्षमता, रचनात्मकता, स्मरण-शक्ति और एकाग्रता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती है। शोधकर्ता इस बात पर जोर देते हैं कि विभिन्न संगीत विधाएँ विशेषकर पारंपरिक स्वरूप सुनने की क्षमता को विकसित करती हैं और शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाती हैं। उनके अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक रूप से जुड़े संगीत को शामिल करने से संपूर्ण विकास में सहायता मिलती है और संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा सामाजिक अधिगम में संतुलन स्थापित होता है। यह दर्शाता है कि पारंपरिक कला-रूपों को मुख्यधारा शिक्षा में शामिल करना कितना आवश्यक है (रॉबर्ट और हॉलम, 2018)।

कृष्णन (2019) के अध्ययन में उन संस्थागत बाधाओं पर प्रकाश डाला गया है, जो स्कूल पाठ्यक्रम में लोक और भक्ति संगीत के समावेशन को प्रभावित करती हैं। रिपोर्ट बताती है कि कई स्कूलों में प्रशिक्षित संगीत शिक्षकों की कमी है, जो देसी संगीत परंपराओं की पर्याप्त समझ रखते हैं। इसके अतिरिक्त, संरचित करिकुलम गाइडलाइन और पर्याप्त संसाधनों की कमी प्रभावी क्रियान्वयन में रुकावट डालती है। कृष्णन का निष्कर्ष है कि जब तक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम और पाठ्यक्रम ढाँचे इन खामियों को दूर नहीं करते, पारंपरिक संगीत औपचारिक शिक्षा में हाशिए पर ही रहेगा (कृष्णन, 2019)।

नायर और जोसेफ (2020) ने अध्ययन में बताया है कि कला-आधारित शिक्षा सांस्कृतिक संरक्षण और पहचान निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देती है। उनके अनुसार, संगीत, नृत्य और दृश्य कलाओं का एकीकृत शिक्षण विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत समझने में मदद करता है और राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत बनाता है। लोक और भक्ति संगीत, जो स्थानीय परंपराओं में गहराई से निहित होते हैं, सांस्कृतिक मूल्यों को अनुभवात्मक रूप से सिखाने का माध्यम प्रदान करते हैं। लेखकों ने पाया कि पारंपरिक कला-रूपों के संपर्क में आने वाले बच्चों में सांस्कृतिक गर्व, बहुसांस्कृतिक संवेदनशीलता और अपनेपन की भावना बढ़ती है (नायर और जोसेफ, 2020)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) भी विद्यालय शिक्षा में भारतीय कला, संगीत और सांस्कृतिक ज्ञान को प्रोत्साहित करने पर बल देती है। राव (2021) के साहित्य में बताया गया है कि छम्चू 2020 लोक और भक्ति संगीत को मुख्यधारा शिक्षण प्रथाओं में शामिल करने का एक बड़ा अवसर प्रदान करती है। यह नीति अनुभवात्मक शिक्षण, बहुविषयी शिक्षा और सांस्कृतिक-आधारित शिक्षण-पद्धति को मजबूत बनाती है। राव का तर्क है कि पारंपरिक संगीत छम्चू के उद्देश्यों के अनुरूप है और विद्यार्थियों में मूल्यबोध, रचनात्मकता और पहचान-निर्माण को सुदृढ़ कर सकता है (राव, 2021)।

मुखर्जी (2022) ने शिक्षा में प्रभावी सांस्कृतिक एकीकरण के लिए समुदाय की भागीदारी के महत्व पर जोर दिया है। उनके अध्ययन में कहा गया है कि स्थानीय संगीतकार, लोक कलाकार और आध्यात्मिक साधक महत्वपूर्ण शिक्षण संसाधन के रूप में कार्य करते हैं। विद्यालय कार्यक्रमों में उनकी सहभागिताकृष्णशॉप, प्रदर्शन और हेरिटेज क्लब गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में वास्तविक अनुभव और सक्रिय सहभागिता को बढ़ाती है। मुखर्जी का निष्कर्ष है कि समुदाय आधारित संगीत शिक्षा सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाती है, व्यावहारिक अधिगम को मजबूत करती है और विद्यालय समुदाय संबंधों को सुदृढ़ करती है, जो पारंपरिक संगीत रूपों के संरक्षण के लिए आवश्यक हैं (मुखर्जी, 2022)।

### अनुसंधान क्रियाविधि

यह अध्ययन एक व्यापक शोध प्रयास है, जिसमें स्कूल पाठ्यक्रम में लोक और भक्ति संगीत को शामिल करने के लिए व्यावहारिक और नीतिगत सुझाव दिए गए हैं। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार लोक और भक्ति संगीत विद्यार्थियों के शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में योगदान दे सकते हैं। अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों और शहरी स्कूलों के शिक्षक और विशेषज्ञ शामिल किए गए। चयन के लिए 4 से 6 आयु वर्ग के प्रतिभागियों को प्राथमिकता दी गई, ताकि यह पता चल सके कि पाठ्यक्रम में शामिल संगीत विधियाँ बच्चों के शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को किस हद तक प्रभावित करती हैं। लोक और भक्ति संगीत को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए नीति, प्रशिक्षण, शैक्षणिक संसाधन और प्रायोगिक मार्गदर्शन का व्यापक विश्लेषण किया गया। शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम विकास, सांस्कृतिक कार्यशालाओं और परफॉर्मंस आधारित गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता और सामाजिक कौशल विकसित करने पर जोर दिया गया। इसके लिए NCERT/SCERT (1973) की शैक्षणिक मार्गदर्शिकाओं का उपयोग किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि सही मार्गदर्शन, संसाधन और प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक बच्चों को लोक और भक्ति संगीत के माध्यम से नैतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक शिक्षा दे सकते हैं। साथ ही, यह विद्यार्थियों में सांस्कृतिक पहचान, स्थानीय परंपराओं की समझ और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देता है। अतः यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि स्कूलों में लोक और भक्ति संगीत को पाठ्यक्रम में शामिल करना न केवल सांस्कृतिक संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास, नैतिक मूल्यों और सामाजिक समझ को भी मजबूती प्रदान करता है।

### परिणाम और चर्चा

रिसर्च से स्कूलों में लोक और भक्ति संगीत की स्थिति, शिक्षात्मक मूल्य और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला गया है। लगभग 80 शिक्षक और संगीत प्रशिक्षक मानते थे कि पारंपरिक संगीत शैलियों को शामिल करने से छात्रों का समग्र विकास होता है (कैपबेल, 1998)। उन्होंने पाया कि लोक धुनें, त्योहारों की धुनें और असेंबली के दौरान भजन जैसी गतिविधियाँ बच्चों को उत्साहित करती हैं और उनमें एकता की भावना बढ़ाती हैं। इन संगीत परंपराओं ने नैतिकता, सांस्कृतिक समझ, सहानुभूति और भावनात्मक अभिव्यक्ति को भी प्रोत्साहित किया।

इसके बावजूद, कई प्रशिक्षकों ने कहा कि उनकी अपर्याप्त देसी संगीत प्रशिक्षण ने क्लासरूम में पारंपरिक रूपों को शामिल करने की उनकी क्षमता में बाधा डाली (नेटल, 2005)। इससे शिक्षक उत्साह और पढ़ाने की क्षमता के बीच एक अंतर दिखाई देता है। डेटा से पता चलता है कि अधिकांश स्कूल अपने पाठ्यक्रम में लोक और भक्ति संगीत को नियमित रूप से शामिल नहीं करते। पारंपरिक संगीत आमतौर पर सालाना समारोह, सुबह की प्रार्थना या त्योहारों तक सीमित रहता है, जबकि वेस्टर्न और आधुनिक संगीत औपचारिक संगीत अवधि पर हावी रहते हैं। पाठ्यक्रम और

सरकारी टेक्स्टबुक में क्षेत्रीय लोक संस्कृति या भक्ति संगीत की व्यवस्थित जानकारी कम होती है, जिससे शिक्षकों के पास स्पष्ट फ्रेमवर्क नहीं होता। स्कूलों में इनफॉर्मल लोक और भक्ति संगीत के शिक्षात्मक प्रभाव भी देखने को मिले। शिक्षक बताते हैं कि बार-बार सुरीले पैटर्न, लोक गीतों में क्षेत्रीय भाषाएँ और संगीत-आधारित गतिविधियाँ छात्रों की याददाश्त, भाषा कौशल और संज्ञानात्मक क्षमता को बढ़ाती हैं। भक्ति संगीत नैतिक गुण जैसे दया, विनम्रता और आभार विकसित करने में मदद करता है। संगीत, कहानी सुनाना, रिदमिक एक्टिविटी और लोक प्रदर्शन छात्रों की रचनात्मकता और कल्पना शक्ति को भी बढ़ाते हैं (उपाध्याय, 2012)।

इसके अलावा, पारंपरिक संगीत सांस्कृतिक जागरूकता और सामाजिक समझ को मजबूत करता है। लोक गीत सीखने वाले छात्र इलाके की परंपराओं, मौसमी घटनाओं, स्थानीय इतिहास और कम्युनिटी व्यवहार को समझते हैं, जिससे सांस्कृतिक गर्व और अपनी विरासत में रुचि बढ़ती है। शिक्षक बताते हैं कि छात्र इन गीतों को परिवार के साथ साझा करते हैं, जिससे पीढ़ियों के बीच संवाद और परिवार की भागीदारी बढ़ती है। ग्रुप भक्ति संगीत छात्रों में एकता और अनुशासन को भी बढ़ावा देता है। हालांकि, कुछ चुनौतियाँ भी हैं। सबसे बड़ी बाधा शिक्षक प्रशिक्षण की कमी है। कई शिक्षक केवल शास्त्रीय या पाश्चात्य संगीत में प्रशिक्षित होते हैं और उन्हें रीजनल लोक संस्कृति की जानकारी नहीं होती। पाठ्यक्रम ढांचा स्पष्ट न होने और समय की कमी जैसी समस्याओं के कारण पारंपरिक संगीत की शिक्षा अक्सर हाशिए पर रहती है। पारंपरिक वाद्ययंत्रों की कमी भी लाइव डेमोंस्ट्रेशन में बाधक होती है।

सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि कम्युनिटी की भागीदारी इस अंतर को दूर करने में मदद कर सकती है। जिन स्कूलों ने लोक कलाकारों, भक्ति गायकों या सांस्कृतिक प्रैक्टिशनरों के साथ काम किया, वहां छात्रों की भागीदारी और उत्साह अधिक था (शर्मा, 2018)। लोक कलाकारों की वर्कशॉप, परफॉर्मेंस और हेरिटेज उत्सव ने संगीत सीखने को रोचक और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनाया। इस अध्ययन से पुष्टि होती है कि पारंपरिक संगीत छात्रों के सांस्कृतिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। टीचर प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम डिजाइन और कम्युनिटी सहभागिता को बेहतर बनाकर पारंपरिक संगीत की शिक्षा को प्रभावी बनाया जा सकता है। इससे बच्चों का बौद्धिक और भावनात्मक विकास बढ़ेगा, सांस्कृतिक पहचान मजबूत होगी, अंतरराष्ट्रीय समझ बढ़ेगी और भारत की संगीत विरासत सुरक्षित रहेगी। इसलिए लोक और भक्ति संगीत को स्कूल पाठ्यक्रम में सिस्टमैटिक और पॉलिसी-ड्रिवन तरीके से शामिल करना आवश्यक है (भारत सरकार, 2020)।

## शैक्षिक दृष्टिकोण

स्कूलों में लोक और भक्ति संगीत बच्चों के कॉग्निटिव, इमोशनल, सोशल और मोरल ग्रोथ को बढ़ाता है। पारंपरिक संगीत एजुकेशन में अलग-अलग इंटेलिजेंस को शामिल करता है। लोक गीतों की रिदम, धुन और कहानियाँ सुनने, बोलने और काइनेस्थेटिक इंटेलिजेंस को डेवलप करती हैं, जबकि धार्मिक संगीत भावनात्मक और स्पिरिचुअल इंटेलिजेंस को डेवलप करता है। गाना, रिदमिक ताली बजाना और संगीतमय कहानी सुनाना छात्र में सुनने, याददाश्त और फोकस को बढ़ावा देता है। ये एक्सरसाइज एनालिटिकल और क्रिएटिव ब्रेन हेमिस्फियर को स्टिमुलेट करती हैं, जिससे कॉग्निटिव इक्विलिब्रियम को बढ़ावा मिलता है। शिक्षकों के अनुसार, लोक और भक्ति संगीत का पार्टिसिपेटरी और इंटरैक्टिव कैरेक्टर छात्र को ज्यादा अटेंटिव, एक्सप्रेसिव और खुशामिजाज बनाता है।

पारंपरिक संगीत बच्चों की मेंटल और भावनात्मक वेलनेस के साथ-साथ उनकी कॉग्निशन को भी बेहतर बनाता है। युवा भक्ति संगीत से शांत होते हैं। इसकी रिलैक्सिंग साउंड, रिदमिक मंत्र और स्पिरिचुअली अपलिफ्टिंग लिरिक्स इमोशंस को रेगुलेट करने में मदद करते हैं (मुखर्जी, 2016)। सुबह की असेंबली या मेडिटेशन के दौरान भक्ति संगीत बच्चों को ग्राउंडेड, शांत और दिन के लिए तैयार महसूस करने में मदद करता है। लोक संगीत, अपनी जानदार लय, मजेदार गानों और जबरदस्त एनर्जी के साथ, एक खुशनुमा क्लासरूम बनाता है जो अच्छी भावनात्मक एक्सप्रेसन को बढ़ावा देता है। छात्र गानों की कहानी और इमोशन से जुड़कर हमदर्दी, दया और भावनात्मक अवेयरनेस सीखते हैं।

लोक और धार्मिक संगीत का एक और शिक्षात्मक फायदा सोशल ग्रोथ है। ट्रेडिशनल म्यूजिक में कलेक्टिव सिंगिंग, सर्कल डांस, फेस्टिवल सॉनग और कॉल-एंड-रिस्पॉन्स स्टाइल आम हैं। छात्र ऐसी एक्टिविटीज से कोलेबोरेशन, कोऑपरेशन और अपनापन सीखते हैं। म्यूजिक अलग-अलग सोशियो-इकोनॉमिक और सांस्कृतिक बैकग्राउंड के युवाओं को जोड़ता है (सुंदरम, 2019)। डिवोशनल म्यूजिक के जरिए वैल्यू-बेस्ड एजुकेशन में दया, विनम्रता, बड़ों का सम्मान और सोशल पीस शामिल हैं। गानों की कहानियाँ और थीम बच्चों को सही तरीके से मॉरैलिटी समझने में मदद करती हैं।

लोक और डिजिटल म्यूजिक एक्सपीरिएन्शियल और गतिविधि आधारित शिक्षा को भी बढ़ावा देता है, जो NEP 2020 के साथ मौजूदा टीचिंग के साथ मेल खाता है। स्टूडेंट इंटरैक्शन, इन्वेस्टिगेशन और रियल-लाइफ एंगेजमेंट पैसिव याद करने की जगह लेते हैं। किसी लोकगीत के सांस्कृतिक इतिहास, इलाके की खासियतों, उससे जुड़े डांस के तरीकों को समझना, या लोकल स्पेशलिस्ट से पारंपरिक तरीकों को समझने के लिए कहना जरूरी हो सकता है। इससे इंस्ट्रक्टर म्यूजिक को सोशल साइंस, भाषा, इतिहास, एनवायरनमेंटल स्टडीज और आर्ट के साथ जोड़ पाते हैं। छात्र को कई तरह का ज्ञान मिलता है, जो एकेडमिक सिद्धांतों को कल्चर से जोड़ता है।

पारंपरिक म्यूजिक पहचान और कॉन्फिडेंस बनाने में मदद करता है। कम्युनिटी के गाने सीखकर छात्र अपने वंश और कल्चर के बारे में ज्यादा सीखते हैं। इससे सेल्फ-एस्टीम और गर्व बढ़ता है, खासकर उन गरीब या आदिवासी छात्र में जिनकी परंपराओं को ऑफिशियल स्कूलिंग में कम दिखाया जाता है। जब छात्र सांस्कृतिकदिनों में लोकगीत गाते हैं, स्पेशल असेंबली में भक्ति गीत गाते हैं, या इंटरस्कूल लोक म्यूजिक कॉन्टेस्ट में हिस्सा लेते हैं तो उनका कॉन्फिडेंस और स्टेज पर मौजूदगी बढ़ती है। ये टैलेंट लीडरशिप, कम्युनिकेशन और पर्सनैलिटी को बेहतर बनाते हैं। लोक और भक्ति म्यूजिक सबको साथ लेकर चलने वाले होते हैं क्योंकि उन्हें महंगे इंस्ट्रूमेंट या एक्सपर्टीज की जरूरत नहीं होती (रेले, 2004)। पारंपरिक म्यूजिक सभी छात्र को फायदा पहुंचाता है, चाहे उनका बैकग्राउंड या एकेडमिक काबिलियत कुछ भी हो। यह सबको साथ लेकर चलने वाली बात पारंपरिक म्यूजिक को एक बेहतरीन टीचिंग इंस्ट्रूमेंट बनाती है जो फेयरनेस, एक्सेसिबिलिटी और होलिस्टिक डेवलपमेंट को बढ़ावा देती है।

### सांस्कृतिक दृष्टिकोण

लोक और भक्ति संगीत को शिक्षात्मक पाठ्यक्रम में शामिल करना जरूरी है क्योंकि ये संगीतमय परंपराएँ भारत के समृद्ध इतिहास को बचाकर रखती हैं। लोक संगीत, जो स्थानीय परंपराओं, रीति-रिवाजों और रोजमर्रा की जिंदगी में गहराई से जुड़ा हुआ है, कम्युनिटी की पहचान और इतिहास को दिखाता है। आध्यात्मिक भक्ति संगीत सदियों पुरानी भारतीय नैतिकता और फिलॉसफी को दिखाता है। जब स्कूलों में इस्तेमाल किया जाता है, तो ये आर्ट फॉर्म छात्र को अपने मूल से जुड़ने और अपनी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में मदद करते हैं। पारंपरिक संगीत एक तेजी से ग्लोबल होते समाज में सांस्कृतिक निरंतरता और अमूर्त विरासत के लिए बहुत जरूरी है, जहाँ युवा पीढ़ी वेस्टर्न मीडिया और डिजिटल एंटरटेनमेंट से ज्यादा प्रभावित होती है (साहा, 2021)।

सांस्कृतिक बचाव जागरूकता से शुरू होता है, और स्कूल पूरी सांस्कृतिक शिक्षा के लिए सबसे अच्छी जगह हैं। लोक गीतों के बोल छात्र को क्षेत्रीय भाषाएँ, बोलियाँ और स्थानीय इतिहास सिखाते हैं। छात्र इन गीतों के जरिए खेती-बाड़ी, मौसमी बदलाव, त्योहारों, कामों और सांप्रदायिक मुद्दों के बारे में अपने पुरखों के जीवन की सराहना कर सकते हैं। हालाँकि, भक्ति संगीत छात्र को भजन, कीर्तन, कव्वाली, अभंग, शबद और भजन जैसी धार्मिक परंपराओं से परिचित कराता है। ये गाने भारत के अलग-अलग स्पिरिचुअल माहौल का सम्मान करके अलग-अलग धर्मों के बीच सहयोग और सांस्कृतिक सेंसिटिविटी को बढ़ावा देते हैं। छात्र दूसरे कल्चर का म्यूजिक सीखकर सांस्कृतिक अवेयरनेस, हमदर्दी और शेयर्ड आइडियल हासिल करते हैं।

स्कूलों में ट्रेडिशनल म्यूजिक लोकल आर्ट और नॉलेज को फिर से जिंदा करता है। मॉडर्नाइजेशन ने परिवारों में लोक और धार्मिक म्यूजिक बोलकर ट्रांसमिशन में रुकावट डाली है। घटती सोशल और इकोनॉमिक दिलचस्पी की वजह से, कई पारंपरिक कलाकार जिंदा रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। जो स्कूल ये संगीत विषय सिखाते हैं, वे लोकल आर्टिस्ट को सेमिनार, डेमोंस्ट्रेशन और पार्टिसिपेटरी परफॉर्मंस के जरिए छात्र को पढ़ाने देते हैं। इससे छात्र की सिखने की परवर्ती बढ़ती है, कलाकार को सहयोग मिलता है और खतरे में पड़ी म्यूजिक ट्रेडिशन को बचाया जा सकता है। ट्रेडिशनल म्यूजिक पीढ़ियों को जोड़ता है (तिवारी, 2015)। स्कूल से घर लाए गए बच्चे, लोकल गानों से पीढ़ियों के बीच बातचीत को बढ़ावा देते हैं क्योंकि बड़े उन्हें अच्छी तरह जानते हैं। परिवार संगीतमय कहानियों, रीति-रिवाजों और अनुभवों को शेयर करके कल्चर को बचाते हैं। इससे पारिवारिक संबंध और कम्युनिटी सांस्कृतिक ट्रांसमिशन बेहतर होता है। स्कूल के सांस्कृतिक इवेंट्स, लोक म्यूजिक, धार्मिक भजनों, पारंपरिक नृत्य प्रदर्शन और कहानी सुनाने के जरिए कॉमन हिस्ट्री का जश्न मनाते हैं और कलेक्टिव आइडेंटिटी को बढ़ावा देते हैं। पारंपरिक संगीत छात्र में सांस्कृतिक गर्व और आत्म-सम्मान बढ़ाता है, खासकर वंचित या आदिवासी कल्चर के छात्र में, जिनकी परंपराओं को मेनस्ट्रीम स्कूलिंग में कम दिखाया जाता है। जब स्कूल उनके सांस्कृतिक रूपों को महत्व देता है, तो इससे उनकी पहचान पक्की होती है और आत्मविश्वास

बढ़ता है। भारतीय संस्कृति अलग-अलग तरह है, और यह शामिल होना इस विचार को मजबूत करता है कि कोई भी सांस्कृतिक विरासत, चाहे वह किसी भी जगह या सामाजिक-आर्थिक स्थिति में हो, जरूरी है और सम्मान की हकदार है।

आध्यात्मिक रूप से समृद्ध भक्ति संगीत सांस्कृतिकमूल्यों और नैतिकता को बेहतर बनाता है। छात्र भक्ति गीतों के जरिए दया, समर्पण, माफी, शांति और साथ रहने जैसे यूनिवर्सल गुण सीखते हैं। ये गाने अंदरूनी शांति और कम्युनिटी से जुड़ाव को बढ़ावा देकर सांस्कृतिकरूप से आधारित सामाजिक मेल-मिलाप को बढ़ावा देते हैं। जिम्मेदारी और सहानुभूति सिखाने के लिए नैतिक और आध्यात्मिक तत्व जरूरी हैं। लोक और धार्मिक संगीत को शामिल करने से सांस्कृतिकसॉफ्ट पावर बढ़ती है। जो छात्र पारंपरिक कला रूपों को जानते हैं, वे नेशनल और इंटरनेशनल इवेंट्स में भारत को रिप्रेजेंट करते हैं। सांस्कृतिकप्रोग्राम्स में उनका जुड़ाव भारत के समृद्ध इतिहास और नेशनल पहचान को बढ़ावा देता है (UNESCO, 2003)।

स्कूलों में लोक और भक्ति संगीत सांस्कृतिक कंटिन्यूटी, वैरायटी, कम्युनिटी रिलेशनशिप, पहचान बनाने और विरासत का सम्मान करने को बढ़ावा देता है। यह युवाओं को अपनी संस्कृति की सराहना करने और संवेदनशील, विनम्र और अंतरराष्ट्रीय रूप से जागरूक बनने में मदद करता है। यह सांस्कृतिक आधार परंपराओं को बनाए रखने और एक ऐसा समुदाय बनाने के लिए जरूरी है जो अतीत का सम्मान करे और भविष्य को अपनाए।

### एकीकरण के लिए प्रस्तावित मॉडल

लोक और भक्ति संगीत को शिक्षात्मक पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए सिस्टमैटिक तरीके से लागू करना, डिजिटल में सीखना और मतलब की भागीदारी जरूरी है। यह तरीका एक्सेसिबिलिटी, सांस्कृतिक ऑथेंटिसिटी, एक्सपीरिएंशियल लर्निंग और मल्टीडिसिप्लिनरी कनेक्टिविटी पर जोर देता है। एकीकरण धीरे-धीरे, डेवलपमेंट के हिसाब से सही होना चाहिए, और पूरे स्कूल में छात्र को ट्रेडिशनल संगीत से रूबरू कराने के लिए हर ग्रेड लेवल पर अपनाया जाना चाहिए। प्राइमरी के बच्चे अपने कॉग्निटिव और भावनात्मक डेवलपमेंट के लिए सही बेसिक लोक धुनों, रिदमिक एक्सरसाइज और धार्मिक भजनों का मजा ले सकते हैं। मिडिल स्कूल में रीजनल अंतर, म्यूजिक के जरिए कहानी, संगीतमय इंस्ट्रूमेंट्स और सांस्कृतिक सेटिंग्स सिखाई जा सकती हैं। प्रोजेक्ट-बेस्ड इंस्ट्रक्शन, संगीतमय ट्रेडिशन रिसर्च और परफॉर्मंस-बेस्ड एक्टिविटीज के जरिए, जो इंडिविजुअल डिस्कवरी की इजाजत देती हैं, सेकेंडरी छात्र गहरी समझ हासिल कर सकते हैं। यह तरीका पाठ्यक्रम डिजाइन से शुरू होता है। स्कूलों को अपने कला या परफॉर्मिंग कला पाठ्यक्रम में ट्रेडिशनल म्यूजिक सीखने के लक्ष्य शामिल करने चाहिए। चुने हुए लोक गीतों के सांस्कृतिकमहत्व को समझना, रीजनल इंस्ट्रूमेंट्स को पहचानना, भक्ति गीत परफॉर्म करना, और म्यूजिक में सामाजिक एकता, त्योहारों और नैतिक मूल्यों को खोजना इसके नतीजे हो सकते हैं (भट्टाचार्य, 2017)। NCERT और SCERT ऐसी रिसोर्स बुक और गानों के कलेक्शन बना सकते हैं जो सभी राज्यों को कल्चर से जुड़ा कंटेंट देने के लिए अलग-अलग इलाके की परंपराओं को दिखाते हों। ग्रुप सिंगिंग, रिदम गेम्स और खुद के बारे में सोचने वाली जर्नलिंग शुरू की जानी चाहिए, इसके बाद छोटे गाने बनाना, लोकल म्यूजिक की परंपराओं को रिकॉर्ड करना और कम्युनिटी आर्टिस्ट का साक्षात्कार लेना जैसे मुश्किल काम किए जाने चाहिए।

दूसरा हिस्सा टीचर ट्रेनिंग पर जोर देता है क्योंकि एकीकरण टीचर पर निर्भर करता है। लोक और भक्ति संगीत प्री-सर्विस और इन-सर्विस ट्रेनिंग में सिखाया जाना चाहिए। टीचर लोकल आर्टिस्ट, म्यूजिक स्कॉलर और सांस्कृतिकऑर्गनाइजेशन वर्कशॉप में प्रैक्टिकल अनुभव पा सकते हैं। पारंपरिक म्यूजिक के डिजिटल कलेक्शन और ऑनलाइन ट्रेनिंग मॉड्यूल इंस्ट्रक्टर को मटीरियल एक्सेस करने में मदद करते हैं। रेगुलर प्रोफेशनल डेवलपमेंट से टीचर कॉन्फिडेंट, मोटिवेटेड और कल्चर के बारे में जागरूक रहेंगे। तीसरा, क्लासरूम में इसे एक्सपीरिएंशियल और इंटरैक्टिव होना चाहिए। पारंपरिक म्यूजिक को हफ्ते में सिर्फ एक बार के बजाय असेंबली, चम, वैल्यू एजुकेशन और भाषा की पढ़ाई में शामिल किया जाना चाहिए। फसल कटाई के त्योहारों पर एक कोर्स में राज्य की लोक धुनों शामिल होनी चाहिए। भक्ति संगीत के साथ दया, शुक्रगुजारी या शांति जैसे नैतिक गुण सिखाए जा सकते हैं। जिंगल बनाना, ताली बजाना, लोक नृत्य को मिलाना और संगीत से जुड़ी कहानियाँ सुनाना, इससे जुड़ाव बढ़ सकता है (पटेल, 2020)।

इस तरीके के लिए कम्युनिटी का जुड़ाव बहुत जरूरी है। लोकल लोक कलाकारों, मंदिर के संगीतकारों, कहानी सुनाने वालों और सांस्कृतिक काम करने वालों को स्कूलों के साथ काम करना चाहिए। छात्र कम्युनिटी के सेमिनार, सांस्कृतिक प्रदर्शनों और आर्टिस्ट-इन-रेजिडेंस प्रोग्राम के जरिए असली परंपराओं का अनुभव करते हैं। इससे स्कूल-कम्युनिटी के बीच बातचीत बेहतर होती है और आने वाली पीढ़ियों के लिए पारंपरिक

ज्ञान बचा रहता है। सांस्कृतिक गतिविधियों में माता-पिता और बड़े-बुजुर्ग भी बचपन का लोक संगीत या धार्मिक भजन शेयर कर सकते हैं। यह कॉन्सेप्ट प्रोजेक्ट-बेस्ड, बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा देता है। छात्र इलाके के भक्ति के तरीकों को देख सकते हैं, लोकल लोक गायकों के बारे में लिख सकते हैं, पारंपरिक इंस्ट्रूमेंट पर पोस्टर बना सकते हैं या अलग-अलग राज्यों को दिखाने वाली छोटी परफॉर्मेंस तैयार कर सकते हैं। छात्र ऐसी कोशिशों को इतिहास, भूगोल, भाषा और सोशल साइंस से जोड़कर एक बड़े एकेडमिक फ्रेमवर्क में संगीत की पढ़ाई कर सकते हैं।

स्कूलों में लोक और भक्ति संगीत को मजबूत करने के लिए, शिक्षकों चरों को पारंपरिक संगीत के तरीकों की स्किल सिखाने के लिए खास ट्रेनिंग प्रोग्राम बनाने चाहिए। स्कूलों को असली सीखने का अनुभव देने के लिए लोकल कलाकारों, सांस्कृतिक संगठनों और कम्युनिटी संस्थाओं के साथ मिलकर काम करना चाहिए। रिसोर्स बुक और पाठ्यक्रम गाइड बनाने से इसे सही तरीके से लागू करने में मदद मिलेगी। पारंपरिक संगीत को सुबह की असेंबली, कला पीरियड, सांस्कृतिक क्लब और को-करिकुलर एक्टिविटी में रेगुलर शामिल किया जाना चाहिए। इसके अलावा, इलाके के हिसाब से लोक गीत और भक्ति परंपराओं को शामिल किया जाना चाहिए ताकि सांस्कृतिकमहत्व पक्का हो सके, जिससे छात्र अपनी विरासत से गहराई से जुड़ सकें और उनका पूरा शिक्षात्मक अनुभव बेहतर हो सके।

### निष्कर्ष

यह अध्ययन स्कूल के पाठ्यक्रम में लोक और भक्ति संगीत को शामिल करने की बहुत ज्यादा शिक्षात्मक और सांस्कृतिकक्षमता पर रोशनी डालती है। नतीजों से पता चलता है कि पारंपरिक संगीत के तरीके दृ जो कम्युनिटी के इतिहास, आध्यात्मिकता और रोजमर्रा के अनुभवों में गहराई से जुड़े हैं दृ पूरे विकास के लिए असरदार पढ़ाने के तरीके के तौर पर काम करते हैं। वे न सिर्फ छात्र की याददाश्त, भाषा सीखने और रचनात्मकता जैसी कॉग्निटिव स्किल को बढ़ाते हैं, बल्कि भावनात्मक इंटेलेजेंस, सहानुभूति, अनुशासन और वैल्यू-बेस्ड समझ को भी बढ़ावा देते हैं। इन अंदरूनी फायदों के बावजूद, मौजूदा स्कूल सिस्टम पारंपरिक संगीत को काफी हद तक नजरअंदाज करते हैं, जिससे छात्र को कम जानकारी मिलती है और सांस्कृतिक एनरिचमेंट के मौके चूक जाते हैं। नतीजे टीचर ट्रेनिंग की कमी, संरचित पाठ्यक्रम दिशा निर्देशों की कमी, कम से कम संस्थागत समर्थन और कम कम्युनिटी एंगेजमेंट जैसी बड़ी रुकावटों को भी दिखाते हैं। टीचर्स, छात्र और कम्युनिटी मेंबर्स की गहरी दिलचस्पी मतलब वाले एकीकरण के लिए एक अच्छे माहौल की ओर इशारा करती है। इस रिसर्च का नतीजा यह है कि स्कूलिंग में लोक और भक्ति संगीत को शामिल करना सिर्फ एक एकेडमिक रिकमेंडेशन नहीं है, बल्कि एक जरूरी सांस्कृतिक जिम्मेदारी है। यह सीधे तौर पर नेशनल शिक्षात्मक लक्ष्यों, खासकर छम्च 2020 से जुड़ा है, जो एक्सपीरिएशियल लर्निंग, आर्ट्स-बेस्ड पेडागॉजी और सांस्कृतिक प्रिजर्वेशन पर जोर देता है। एकीकरण का प्रोजेक्ट मॉडल, जो क्लासरूम प्रैक्टिस, मल्टीडिसिप्लिनरी रणनीति और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित है, इम्प्लीमेंटेशन के लिए एक प्रैक्टिकल रोडमैप देता है। अगर सिस्टमैटिक तरीके से अपनाया जाए, तो यह अप्रोच सांस्कृतिकरूप से जुड़े, इमोशनली बैलेंस्ड और सोशली अवेयर लर्नर्स बनाने में मदद कर सकता है जो भारत की संगीतमय हेरिटेज की रिचनेस की तारीफ करते हैं। आखिर में, यह अध्ययन पॉलिसी लेवल पर सुधारों, लगातार टीचर ट्रेनिंग, और स्कूल-कम्युनिटी पार्टनरशिप को मजबूत करने की वकालत करती है, ताकि यह पक्का हो सके कि पारंपरिक संगीत मॉडर्न एजुकेशन का एक जीवंत और जरूरी हिस्सा बन जाए, जो सांस्कृतिकपहचान को बचाने और आने वाली पीढ़ियों के पूरे विकास में योगदान दे।

### संदर्भ

- सिंह, ए. के. (2015). क्षेत्रीय संस्कृति को बचाने में लोक संगीत की भूमिका। *जर्नल ऑफ फोक स्टडीज*, 12(3), 45-52
- शर्मा, आर., और मेहता, पी. (2017). भक्ति संगीत और बच्चों के नैतिक और भावनात्मक विकास में इसकी भूमिका। *जर्नल ऑफ शिक्षात्मक साइकोलॉजी एंड कल्चर*, 12(3), 45-58.
- रॉबर्ट, पी., और हॉलम, एस. (2018). संगीत शिक्षा और संज्ञानात्मक विकास सीखने पर अलग-अलग संगीत शैलियों के प्रभाव की खोज। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ म्यूजिक एजुकेशन रिसर्च*, 27(2), 110-126.
- कृष्णन, एम. (2019). स्कूल के पाठ्यक्रम में पारंपरिक संगीत को शामिल करने में बाधाएं एक संस्थागत विश्लेषण। *जर्नल ऑफ कला स एंड एजुकेशन पॉलिसी*, 8(1), 33-49.
- नायर, ए., और जोसेफ, एस. (2020). स्कूलों में कला पर आधारित पढ़ाई और सांस्कृतिकपहचान बनाना। *इंडियन जर्नल ऑफ सांस्कृतिकस्टडीज इन एजुकेशन*, 5(2), 22-37.
- राव, एस. (2021). छम्च 2020 और स्कूली शिक्षा में भारतीय कला का फिर से आना मौके और चुनौतियाँ। *पॉलिसी पर्सपेक्टिव्स इन एजुकेशन*, 9(4), 55-71.

- मुखर्जी, टी. (2022). सांस्कृतिक एजुकेशन में कम्युनिटी की भागीदारी स्कूलों में पारंपरिक संगीत की एक स्टडी। *जर्नल ऑफ हेरिटेज एंड शिक्षाप्रैक्टिस*, 11(2), 78-93
- ब्लैकिंग, जे. (1973). हाउ संगीतमय इज मैन? यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस.
- कैपबेल, पी. एस. (1998). सॉन्स इन देयर हेड्स म्यूजिक एंड इट्स मीनिंग इन चिल्ड्रन्स लाइव्स. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- नेटल, बी. (2005). द स्टडी ऑफ एथनोम्यूजिकोलॉजी थर्टी-वन इश्यूज एंड कॉन्सेप्ट्स. यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोइस प्रेस.
- वेड, बी. सी. (2005). भारत में संगीत क्लासिकल परंपराएं। मनोहर पब्लिकेशन्स।
- उपाध्याय, के. (2012). स्कूल पाठ्यक्रम में लोक परंपराओं का एकीकरण। *इंडियन जर्नल ऑफ म्यूजिक एजुकेशन*, 4(2), 45-57.
- शर्मा, एन. (2018). स्कूली बच्चों के बीच भक्ति संगीत और वैल्यू-बेस्ड लर्निंग। *जर्नल ऑफ इंडियन कल्चर एंड एजुकेशन*, 6(1), 22-34.
- भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- मुखर्जी, पी. (2016). प्राइमरी एजुकेशन में एक पेडागॉजिकल टूल के तौर पर लोक संगीत। *इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ एजुकेशन*, 62(5), 613-628.
- सुंदरम, आर. (2019). कंटेंपररी स्कूलिंग में सांस्कृतिकआइडेंटिटी और ट्रेडिशनल आर्ट्स। *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च*, 8(3), 112-125.
- रेले, डी. (2004). स्कूलों में म्यूजिक एजुकेशन इंडियन पर्सपेक्टिव्स. मुंबई संगीत रिसर्च एकेडमी.
- साहा, ए. (2021). किशोरों में भावनात्मक डेवलपमेंट में भक्ति के तरीकों की भूमिका. *जर्नल ऑफ शिक्षात्मक साइकोलॉजी इंडिया*, 9(4), 51-67.
- तिवारी, एम. (2015). स्कूल-बेस्ड कला प्रोग्राम के जरिए इनटैन्जिबल हेरिटेज को बचाना. *सांस्कृतिकस्टडीज रिव्यू*, 21(2), 89-103.
- UNESCO (2003). इनटैन्जिबल सांस्कृतिकहेरिटेज की सुरक्षा के लिए कन्वेंशन. UNESCO पब्लिकेशन्स.
- भट्टाचार्य, एस. (2017). भारतीय क्लासरूम में लोक परंपराएं चुनौतियां और मौके. *शिक्षात्मक रीजोनेंस*, 12(1), 77-90.
- पटेल, आर. (2020). स्टूडेंट एंगेजमेंट पर आर्ट्स-इंटीग्रेटेड लर्निंग का असर. *जर्नल ऑफ होलिस्टिक एजुकेशन*, 5(2), 39-54.